कार्यपत्र

(त्रैमासिक प्रस्तुति के साधन)

प्रथम कक्षा के शिशुओं के लिए

प्रस्तुतकर्ता

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, असम

नाम : .....

कक्षा :.....कमांक : .....

विद्यालय : .....

प्रकाशक

समग्र शिक्षा, असम, काहिलिपारा, गुवाहाटी-७८१०१९

भूमिका

बुनियादी स्तर पर शिशुओं की बुद्धि, सामग्रिक विकास और सिखने के मजबुत आधार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बुनियादी स्तर में बच्चों की वृद्धि, समग्र विकास और सीखने के मजबूत नींव एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बच्चों को स्वास्थ्य, स्वस्थ जीवन, सफल संचार, भाषा साक्षरता, गणितीय सोच, पर्यावरण जागरुकता आदि बुनियादी योग्यताओं को हासिल करने के लिए इस स्तर पर समान गुणवत्ता वाली शिक्षा आसानी से उपलब्ध होना आवश्यक है। इसलिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) बच्चों की सर्वोत्तम शिक्षा के लिए विद्यालय में पहली कक्षा की शुरूआत में पूर्व प्राथमिक बच्चों के लिए आवश्यक बुनियादी योग्यताओं को प्राप्त करने में जोर देते हुए राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने 3 महीने या 12 सप्ताह के प्रतिदिन 4 घंटे के लिए विद्यालय स्कूल तैयारी मॉड्यूल/दस्तावेज ''विद्या प्रवेश'' तैयार किया है। यह विद्यालय प्रस्तुति कार्यक्रम पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों के लिए सखने की कमी को पुरा करने के लिए एक अंतरिम उपाय के रूप में काम करेगा। जिन बच्चों के विकासात्मक योग्यताओं की नींव दृढ़ होते हैं ऐसे बच्चे अगले चरण पर उन्नत योग्यताओं को आसानी से और प्रभावी ढंग से हासिल कर सकते हैं। इसलिए, यदि पहली कक्षा की शुरूआत सहज और आरामदायक हो तो बच्चे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में और विद्यालय की शिक्षा प्रणाली में सफलतापूर्वक समायोजित कर सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि आज प्राथमिक विद्यालय के अधिकांश बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्राप्त करने की गंभीर स्थिति है। समय पर विकासात्मक गतिविधियों को शामिल करने से विभिन्न पृष्टभूमि से आए हुए बच्चों को अपने समग्र विकास को प्राप्त करने के लिए आवश्यक बुनियादी कौशल को एकीकृत करने और उसमें महारन हासिल करने में मदद मिलेगी। विद्या प्रवेश भारत में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के लिए राष्ट्रीय अभियान है। भारत सरकार के अनुमोदन से, यह प्रवेश मॉड्यूल पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के अनुभव वाले और बिना अनुभव वाले सभी बच्चों के लिए लागू होगा। स्थानीय शिक्षण-अधिगम सामग्री का उपयोग करने से शिक्षकों को बच्चों के लिए निर्धारित कौशलों को हासिल कराने में मदद मिलेगी और बच्चों का विद्यालन नामांकन सुचारू, निडर और आनंददायक हो जाएगा। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि माता-पिता और समुदाय बच्चे के विकास के लिए सचेत प्रयासों में संलग्न हों।

विद्यालय प्रस्तुति मोडयूल के साथ ही पहली कक्षा के प्रवेश किए गए शिशुओं के विकास के लक्ष्य, योग्यता और सिखने के परिणामों में महत्व को समझकर त्रैमासीय (12 सप्ताह) कार्यशाला के माध्यम से एक कार्यपत्र प्रस्तुत किया गया है। कार्यशाला में शिक्षाविदों के अलावा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, असम और शैक्षिक प्रशिक्षण प्रतिष्ठान के अभिज्ञ व्यक्तियों को शामिल किया गया है।

इस कार्यपत्र की उपयोगिता और गुणवत्ता सुधार के लिए सभी पक्षों के विचार और सुझाव चाहते हैं।

निदेशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, असम।

शिक्षक-शिक्षिकाओं के प्रति

पहली कक्षा में नामांकित बच्चों के लिए स्थानीय परिस्थिति और उनकी जरूरतों के अनुसार 'तीन महीने या 12 सप्ताह के विद्यालय के लिए तैयारी' का एक मॉड्यूल शिक्षक/शिक्षिकाओं के लिए प्रस्तुत किया गया है। यह मॉड्युल 'विद्याप्रवेश' के त्रिमासीय खेल संबंधी विद्यालय प्रस्तुति के दिशानिर्देशों (पृष्ठ 12-35) में दिए गए हैं।

योजनाबद्ध ढंग से क्रिया-कलाप/गतिविधि शामिल करके मोड्यूल के आदान-प्रदान, शिशु की प्रगति अथवा मूल्य निरूपण के प्रति दृष्टि रखना, शिशु के शिक्षणकार्य में माता-पिता और समाज को शामिल करना, सप्ताहिक दिनलिपि प्रस्तुति की समयसूची या दैनिक क्रिया-कलाप को शिक्षक किस प्रकार प्रस्तुत करेंगे, इन सभी दिशाओं को समेटते हुए मोड्यूल की योजना प्रबंधन के सन्दर्भ में निर्देश प्रस्तुत किए गए हैं। परियोजना और क्रिया-कलापों को साझा करने के लिए शिक्षक/शिक्षिकाओं से निम्नलिखित दिशाओं पर ध्यान केंन्द्रित करने की अपेक्षा की गई है.....

- विकास के लक्ष्यों, योग्यताओं और सीखने के परिणामों (परिशिष्ट-1) को ध्यान में रखते हुए 3 महीने 12 सप्ताह की परियोजना प्रस्तुत करेंगे।
- विकास के तीन लक्ष्यों से बच्चों को प्रतिदिन अनुभव प्राप्त करने के लिए दिए जाने चाहिए।
- कार्यक्रम के आदान-प्रदान के लिए दैनिक और साप्ताहिक कार्यक्रम तैयार करेंगे। उदाहरण एक सप्ताह की समयसूची के रूप में दिए गए हैं। (पृ. 12-35)
- कार्यक्रम की परियोजना और प्रस्तुत करते समय शिक्षक/शिक्षिका द्वारा शुरू की गई और बच्चे द्वारा शुरू की गई गतिविधियाँ, आंतरिक और बाहरी गतिविधियाँ, बड़ी और छोटी समूह की गतिविधियों के बीच संतुलन बनाने की जरूरत है।
- एक सप्ताह की दैनिक समयसूची की गतिविधि की परियोजना और उदाहरण के लिए समयसूची की रूपरेखा पढ़ेंगे और एक दिन के लिए कार्यक्रम की परियोजना बनाएंगे। सीखने के अवसर लचीले होने चाहिए और गतिविधि, कार्यपत्र, शिक्षण सामग्री, खिलौना, कहानी, गल्प आदि के माध्यम से शिक्षण प्रदान किए जाने चाहिए।
- आवश्यक शिक्षण सामग्री के लिए पाठ्यचर्या आदान-प्रदान करने के लिए परियोजना पहले से बनाई जानी चाहिए। ये शिक्षण सामग्रियाँ, शिक्षकों द्वारा सस्ती, कम खर्च या स्थानीय सामग्री का उपयोग करके तैयार की जा सकती है। शिक्षण-अधिगम के लिए निर्माणकी गई कुछ सामग्रिया भी खरीद सकते हैं। प्राकृतिक संसाधनों जैसे पेड़ के पत्ते, तने, छोटे पत्थर आदि को सीखने की सामग्री के रूप में शामिल करने की परियोजना करेंगे।
- स्थानीय कठपुतलियों और सामग्रियों का उपयोग करेंगे। सुनिश्चित करेंगे कि बच्चे सामग्रियों को आसानी से व्यवहार कर सकें और इन सामग्रियों और अन्य सामग्रियों को सुरक्षित रूप से प्राप्त कर सकें।
- चयनित गतिविधि के अनुसार बच्चों के बैठने की परियोजना बनाएंगे। बच्चों के साथ, विशेष रूप से सक्षम बच्चों की जरूरतों का (CWSN) ख्याल रखकर उनके बैठने की व्यवस्था करेंगे।

- शिशुओं को अधिक समय तक सीखने की गतिविधियों में शामलि होने के अवसर देने के लिए उद्देश्यपूर्ण गतिविधियों और कार्यपत्रों को दोहराएंगे।
- शिशुओं की रूचियों के आधार पर, दैनिक गतिविधियों की समयसुची या उदाहरणों की साप्ताहिक समयसूची को गतिविधियों के बीच समायोजित या लचीला किया जा सकता है।
- शिशु की प्रगति के बारे में जानकारी लेना और मूल्यांकन के पर्याय को समझने के लिए प्रत्येक शिशु की तीन महीने के मासिक प्रगति की जानकारी, उसके मूल्यांकन की रूपरेखा (विद्याप्रवेश परिशिष्ट-2) में प्रस्तुत किया गया है।
- प्रत्येक शिशु की प्रगति का मूल्यांकन करते समय पूर्व पर्याय में उन्होंने कितना सीखा है, उसका पता लगाने हेतु मूल्यांकन करेंगे।
- तीसरे पर्याय के मूल्यांकन के पश्चात प्रत्येक शिशु के तथ्यों को संग्रह करके रखेंगे ताकि भविष्य में /आनेवाले समय में शिशु के लिए सहायक हो। इसके अलावा सिखने के अनुभवों की योजना बनाते समय माता-पिता अथवा अभिभावकों के साथ चर्चा करने के समय और जरूरत के अनुसार कार्यसूची परिवर्तन करते समय सहायक होते है।

कार्यपत्र संबंधी कुछ बाते :

'क' कक्षा के शिशुओं के लिए प्रस्तुत कार्यपुस्तका के अन्तर्गत जितने भी कार्यकलाप है, उन्हें आनन्दपूर्ण करने का प्रयास किया गया है। कार्यपुस्तिका के प्रत्येक क्रिया के शीर्षक के साथ शिक्षक के लिए निर्देशों को भी शामिल किया गया है। विद्यालय आने के दो महीना बाद यह कार्यपुस्तिका शिशु के हाथ में दे पाएँगे। शिशुओं को देने से पूर्व आपसभी से कार्यपुस्तिका को शुरू से अंत तक पढ़कर एक प्रभावी शिक्षादान की व्यवस्था के लिए आशा प्रकट की गई है।

कार्यपुस्तिका में निहित कार्यकलाप कराते समय शिक्षकों को निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना है-

- ☞ सर्वप्रथम शिशुओं को कार्यकलाप के लिए आग्रही करने हेतु प्यार से बात करके घनिष्ठ हो आएँगे।
- ☞ क्रियाकलाप कराते समय शिशुओं को चित्र देखकर बोलने हेंगे, न कर पाए तो मदद करेंगे।
- ☞ कुछ कार्यकलापों से साथ मेल खआनेवाले अन्य कार्य भी खुद से करवाएँगे। इसके लिए पहले से योजना बनाएँगे।
- ☞ भंगिमा गीत और कतिवा अच्छी तरह याद करेंगे, ताकि शिशुओं को सिखाते समय कार्यपुस्तिका देखना न पड़े।
- ☞ गीतों को हाव तथा सुरीले ढंग से गाएँगे और शिशुओं को अनुसरण करने देंगे।
- ☞ बिन्दुओं को जोड़ते समय संकेत चिह्न के दिशा अनुसार कराएँगे और जरूत पड़े तो हाथ पकड़कर करवाएँगे।
- ☞ कुछ नमुने कुध ही चित्र बनाकर शिशुओं को प्रारम्भिक लेखन का अभ्यास कराएँगे।
- ☞ छोटे-मोटे प्रश्नों के माध्यम से शिशुओं के साथ सहज रूप से वार्तालाप करेंगे।
- ☞ इस बात पर ध्यान ढेंगे कि सभी शिशु ने बातचीत में भाग लिया।

- ☞ कार्यपुस्तिका में दिए गए चित्रों के सहायता से शिशुओं को खुले मन से स्वत बातचीत करने देंगे।
- ☞ शिशुओं के मन में उठनेवाले प्रश्नों को बिना हिचकिचाहट के पुछने का मौका देंगे।
- ☞ कार्यपत्र में दिए गए क्रिया कलापों को निर्देशानुसार कराएँगे।
- ☞ यह निश्चित करेंगे कि प्रत्येक शिशुओं द्वारा लिए गे क्रिया कलापों के नमूनों को पर्टपलिअ/विभाग में संरक्षण करें।

विशेष रूप से सक्षम शिशुओं को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक क्रिया–कलाप कराते समय सहायता प्रदान करेंगे

यह निश्चित करेंगे कि विद्यालय के प्रारंम्भिक दिन से ही शिशु अस्वास्थ्यकर उपयोगों के सम्बंध में शुद्ध और स्पष्ट धारणा प्राप्त करें। अस्वास्थ्यकर प्रयोगों के अलावा पर्यावरण जागरूकता और संवेदनशीलता प्रदर्शन हेतु, जैसे–पानी दुर्योपयोग न करना, जरूरत न होने पर लाइट, पंखा आदि बंद रखनेवाले बातों को चित्र के माध्यम से कैलेंडर रूप से दीवार पर टाँगकर रखेंगे।